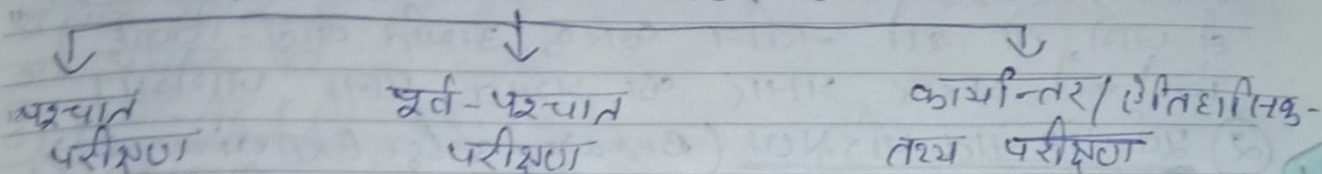


जानने में असफल रहता है, तब वैज्ञानिक के लिए प्रयोग को सधारा लेना आवश्यक हो जाता है।

स्पष्ट है कि प्रयोगात्मक या परीक्षणोत्सुक शैली का सामाजिक विज्ञानों में बड़ी महत्व है जो मौखिक विज्ञानों में प्रयोगशाळा पद्धति से है।

परीक्षणोत्सुक शैली तीन प्रकार के होते हैं -



1) प्रश्नात परीक्षण (After Experiment) →

इसमें सर्वप्रथम समान विशेषताओं एवं प्रकृति वाले दो समूहों को चुन लिया जाता है। इनमें से एक समूह नियंत्रित समूह और दूसरा समूह परीक्षणोत्सुक के नाम से जाना जाता है। नियंत्रित समूह में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन लाने का प्रयत्न नहीं किया जाता है, और किसी तरह कारक या नवीन परिदृश्यों द्वारा बदलने का प्रयास नहीं किया जाता। परीक्षणोत्सुक समूह में किसी नवीन परिदृश्यों का प्रभाव नहीं पड़ने दिया जाता। कुछ समय पर प्रश्नात परीक्षणोत्सुक - समूह पर नवीन कारक या परिदृश्यों के प्रभाव को मापा जाता है। यदि नियंत्रित और परीक्षणोत्सुक दोनों ही समूहों में समान परिवर्तन आते हैं तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि नवीन कारक या परिदृश्यों का परीक्षणोत्सुक - समूह पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। यदि नियंत्रित - समूह की तुलना में परीक्षणोत्सुक - समूह में परिवर्तन अधिक होते हैं तो इसका अर्थ यह हुआ कि नवीन परिदृश्यों या कारक का प्रभाव पड़ा है। यहां उदाहरण के तौर पर दो समान समूह या जातों को लिया जा सकता है। इनमें बाल-विवाह का काफी प्रचलन है। इनमें से एक समूह में बाल-विवाह के कारण परीक्षणोत्सुक समूह मान लिया

March 2018

Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa	Su
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24

MARCH
APRIL
MAY
JUNE

Friday ♦ WK 08 (054-311)

कारण है कौन सी परिधि-अवस्था में उस धरना के
 धारित होने में योग दिया है। यह विषय के द्वारा
 09 गैतिधारिक धरना - चक्रों का पता लगाकर वर्तमान
 10 अवस्थाओं या धरनाओं के कारणों की खोज की
 जानी है।

11

12

01

02

03